RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
RESEARCH
Vol. : 7, Issue : 2 & 3
Jul. - Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 41 - 46
ISSN 2278 – 5949
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Research Journal

सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

मोनू राम
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, के0एल0डी0ए0वी0(पी0जी0) कालेज रुड़की

Received : 27/10/2018 *1st BPR* : 01/11/2018 *2nd BPR* : 11/11/2018 *Accepted* : 19/11/2018

ABSTRACT

शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। यह मानव जीवन की आधारशिला है, जो उसे देवत्व का दर्शन कराती है तथा समाज का प्रगतिशील, सुसंस्कृत एवं सभ्य नागरिक बनाती है। व्यक्ति की शिक्षा पर उसके व्यक्तित्व एवं शिक्षा के प्रति उसकी इच्छा शक्ति या आकांक्षा का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक रूप से पिछड़ें विद्यार्थियों (अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति) के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध के अध्ययन पर केन्द्रित है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श चयन में असम्भाविता न्यादर्शन विधि के अन्तर्गत उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि का प्रयोग करके 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। अध्ययन के परिणामस्वरूप पाया गया कि छात्रों का व्यक्तित्व एवं उनकी शैक्षिक आकांक्षा एक दूसरे को प्रभावित करती है, जिसका प्रभाव उनकी शिक्षा को भी कहीं न कहीं प्रभावित करता है।

मुख्य शब्द : सामाजिक रूप से पिछडें विद्यार्थी, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक आकांक्षा, सहसम्बन्ध।

''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात विद्यारुपी ज्ञान के प्रकाश द्वारा ही इस अन्धकारमय संसाररुपी भवसागर को पार किया जा सकता है, और परमसत्य मोक्ष की प्रप्ति की जा सकती है।

जॉन लॉक के अनुसार,''पौधे का विकास कृषि द्वारा तथा मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। जो जीवन से मृत्यु तक विस्तृत है। यह मनुष्य के आन्तरिक विकास एवं वृद्धि की निरन्तर होने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा अन्धकार में भटकते हुए राही के लिए प्रकाश पुंज के समान है, जो मानव को सत्य–असत्य, उचित–अनुचित का ज्ञान कराती है, अर्थात शिक्षा मानव जीवन की आधार शिला व सामाजिक जीवन का अनिवार्य उपादान है। प्रकृति के आंगन में सूर्य के प्रकाश से जिस प्रकार कमल का पुष्प खिल उठता है, ठीक उसी प्रकार शिखा रुपी ज्ञान को पाकर मनुष्य प्रकाशवान हो जाता है तथा शिक्षा के अभाव में मानव दरिद्रता, शोक एवं कष्ट के अन्धकार में डूबा रहता है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुश्य एवं उसके सामाजिक परिवेश को प्रगतिशील, सांस्कृतिक एवं सभ्य बनाना है।

भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार एवं कर्त्तव्य प्रदान किये गये है तथा इसी सिद्धान्त पर लोकतन्त्र, अपनी जड़ों को मजबूत किये हुए है। आधुनिक भारतीय समाज अनेक जातियों में विभाजित है। प्राचीन काल में समान को व्यवसाय के आधार पर विभिन्न वर्गों में बाँटा गया था, जो वर्तमान में वर्ग ने रहकर वर्ग के नाम पर विभिन्न जातियों व उपजातियों में बटकर रह गया है। राष्ट्र की उन्नति समाज के सभी वर्गों, जातियों, धर्मों तथा समुदायों के लोगो को साथ लेकर ही हो सकती है।

हमारे देश की जनसंख्या का एक बड़ा भाग सामाजिक रुप से पिछड़ा हुआ है, जिसमें अनुसूचित जाति तथा जनजातियों का मुख्य स्थान है। यह वर्ग अभी भी सामाजिक एवं आर्थिक रुप से अन्य वर्गों से पिछड़ा हुआ है। सन् 1950 में संविधान लागू होने के उपरान्त कुछ पिछड़ी जातियों, जनजातियों एवं समुदायों को अनुसूचित जाति एवं जनजाति की संज्ञाा दी गई। संविधान की धारा–15 में समाज के सभी वर्गों को समानता का अधिकार प्रदान किया गया है तथा धारा–29 के अनुच्छेद–2 में सामाजिक एवं शैक्षिक रुप से पिछड़ों, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विकास पर बल दिया गया है। धारा–46 में अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्गों के शैक्षिक एवं आर्थिक हितों की बात की गई है।

व्यक्तित्व

आलपोर्ट के अनुसार ''व्यक्तित्व व्यक्ति के अन्दर उन मनोशारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ उसका एक अनूठा समायोजन स्थापित करते हैं।'' मन के अनुसार, ''व्यक्तित्व मन की रचना, व्यवहारिक ढंग, रूचि, अभिवृति, सामर्थ्य, योग्यता तथा अभिरूचि का विलक्षण संगठन है।'' कैटिल के अनुसार, ''एक व्यक्ति का व्यक्तित्व वह है, जिसके आधार पर

RESEARCH
RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
Issue : 2 & 3, Vol. : 7, Jul.-Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 41 - 46, ISSN 2278 – 5949
मोनू राम
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Research Journal

हम कह सकते हैं कि किसी प्रदत्त परिस्थिति में वह क्या करेगा।'' उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के रूपों, गुणों, प्रवृत्तियों, सामर्थ्य आदि का संगठन है। व्यक्तित्व, व्यक्ति तथा परिवेश की परस्पर अन्तःक्रिया का परिणाम है। यह व्यक्ति के व्यवहार का समग्र गुण है जिसके द्वारा वह दूसरों को प्रभावित करता है। जुंग ने सामाजिक अन्तःक्रिया की दृष्टि से व्यक्तित्व को तीन भागों में बाँटा है – अन्तर्मुखी, उभयमुखी तथा बहिर्मुखी।

वर्तमान शोध में व्यक्तित्व का दो विमाओं अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी के संदर्भ में अध्ययन किया गया है, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

- **अन्तुर्मखी व्यक्तित्व** – अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति संकोची, विचार प्रधान, कम व्यवहारकुशल, एकान्त प्रिय, आदर्शवादी, आत्मगत दृष्टिकोण वाले, देर से निर्णय लेने वाले, निर्णयों को देर से क्रियान्वित करने वाले, भविष्य को महत्व देने वाले, कम बोलने वाले आदि विशेषताओं वाले होते हैं।
- **बर्हिमुखी व्यक्तित्व** – बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति समाजवादी, यथार्थवादी, व्यवहारकुशल, भाव प्रधान, संकोच रहित, भौतिकवादी, अधिक वाक् शक्ति वाले, अधिक कार्यशील, वर्तमान को महत्व देने वाले, शीघ्र निर्णय लेने वाले तथा वस्तुगत दृष्टिकोण आदि विशेषताओं वाले होते हैं।

शैक्षिक आकांक्षा

प्रत्येक बालक में कुछ पाने की प्रबल इच्छा होती है, जिसके लिए वह निरन्तर प्रयासरत रहता है। हरलॉक ने आकांक्षा को व्यक्ति की वर्तमान स्थिति से आगे बढ़ने या ऊपर उठने के प्रयास के रुप में परिभाषित किया है। आकांक्षा में उपलब्धि की इच्छा अप्रत्यक्ष होती है। प्रत्येक बालक में शिक्षा के लिए कुछ आकांक्षाएँ होती है। शैक्षिक आकांक्षा को शैक्षिक उपलब्धि तथा लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित कराने वाला साधन माना जा सकता है। शैक्षिक आकांक्षा के अर्न्तगत बालक पिछले अनुभव, उसकी योग्यता एवं सामर्थ्य, उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु किये जाने वाले प्रयास के आधार पर उसकी अपनी भावी उपलब्धि का अनुमान 'चाहे कम हो या अधिक' को शामिल किया जाता है। शैक्षिक आकांक्षा बालक के व्यक्तिगत कारकों, कौशलों, आत्म–प्रत्यय, आत्म–निर्भरता आदि के अतिरिक्त परिवार की आर्थिक–सामाजिक स्थिति, जाति, धर्म, अभिभावकों का शैक्षिक स्तर आदि से प्रभावित होती है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

पटेल (2013) अपने अध्ययन में बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की स्वनिष्ठा में सार्थक अन्तर पाया। नेहरा, सुमन (2014) ने अपने अध्ययन में बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक नहीं पाया। हुसैन (2014) ने अपने अध्ययन में व्यक्तित्व प्रकार तथा B के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया। शर्मा तथा सिंह (2014) ने अपने अध्ययन में CBSE तथा UP बोर्ड से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन एवं चिन्ता स्तर का बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों पर सार्थक अन्तर पाया। सुनाली, सिंह (2008) ने अपने अध्ययन में बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया। सिंह एवं कुमार (2011) ने अपने अध्ययन में बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर पाया, बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा बालकों की तुलना में अधिक पायी गयी। कौर (2012) ने अपने अध्ययन में सरकारी एवं प्राइवेट उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया। कुमारी, नीलम (2014) ने अपने अध्ययन में ग्रामीण तथा शहरी मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक आकांक्षा में अन्तर पाया, शहरी महिलाओं की शैक्षिक आकांक्षा ग्रामीण महिलाओं की तुलना में उच्च पायी गयी।

उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि व्यक्तित्व की अन्तर्मुखता एवं बहिर्मुखता का व्यक्ति की कार्यप्रणाली एवं अन्य सभी मनोवैज्ञानिक आयामों से सीधा सम्बन्ध है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाला व्यक्ति अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की अपेक्षा परिस्थिति के अनुरूप आसानी से अनुकूलन कर लेता है। उसकी बहिर्मुखता या अन्तर्मुखता का उसकी आकांक्षाओं, इच्छाओं, संवेगों, अभिव्यक्ति क्षमता, समायोजन क्षमता आदि अनेक व्यवहारिक आयाम प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित रहते है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

RESEARCH
RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
Issue : 2 & 3, Vol. : 7, Jul.-Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 41 - 46, ISSN 2278 – 5949
मोनू राम
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Research Journal

परिकल्पनाएँ

1. सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
3. सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श प्रविधि का उद्देश्य देहरादून तथा हरिद्वार जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों की ग्यारहवीं तथा बारहवीं कक्षाओं में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बालक एवं बालिकाओं के प्रतिनिधि न्यादर्श का चयन करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधकर्त्ता द्वारा असम्भाविता न्यादर्श विधि के अर्न्तगत उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार देहरादून तथा हरिद्वार जिले के 600 अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श प्रविधि द्वारा चयन किया गया। न्यादर्श में 300 बालकों तथा 300 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श में चुने गये 600 विद्यार्थियों के व्यक्तित्व अध्ययन में केवल अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों को ही शामिल किया गया है, उभयमुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों को अध्ययन में शमिल नही किया गया है।

उपकरण :–

1. **व्यक्तित्व** :– विद्यार्थियों के व्यक्तित्वका डॉ0 पी0 एफ0 अजीज एवं डॉ0 रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित 'एक्ट्रोवरजन–इन्ट्रोवरजन इन्वैन्ट्री' द्वारा मापन किया गया है।
2. **शैक्षिक आकांक्षा** :– वर्तमान शोध अध्ययन में, शैक्षिक आकांक्षा को आश्रित चर के रूप में लिया गया है। इस चर को डॉ0 वी0 पी0 शर्मा एवं डॉ0 ए0 गुप्ता द्वारा निर्मित 'शैक्षिक आकांक्षा मापनी' द्वारा मापा गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ :– प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन तथा सहसम्बन्ध का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य–1 सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना– सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी –1

सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

	चर	विद्यार्थियों की संख्या	आवृति अंश	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध	अन्तर्मुखता शैक्षिक आकांक्षा	118	116	0.148	असार्थक
	बहिर्मुखता शैक्षिक आकांक्षा	289	287	0.142*	सार्थक

* = 0.05 सार्थकता स्तर

सारणी 1 में सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों के व्यक्तित्व (अन्तर्मुखता तथा बहिर्मुखता) तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक प्रदर्शित किये गये हैं। सारणी से स्पष्ट है कि आवृति अंश 116 पर सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.148 प्राप्त हुआ है, जो धनात्मक तथा अति निम्न स्तर का है। यह मान चरों के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न स्तर के सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। परन्तु यह सहसम्बन्ध गुणांक 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा में एक ही दिशा में जाने की प्रवृति तो है परन्तु यह प्रवृति सार्थक स्तर की नहीं है।

दूसरी ओर आवृति अंश 287 पर सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों की बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.142 प्राप्त हुआ है, जो धनात्मक तथा अति निम्न स्तर का है। यह मान चरों के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न स्तर के सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया है। इससे यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक रूप से एक ही दिशा में जाने की प्रवृति है।

अतः शून्य परिकल्पना कि ''सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है'', आंशिक रूप से स्वीकृत तथा आंशिक रूप से निरस्त की जाती है।

उद्देश्य–2 सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना – सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी – 2

सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

	चर	बालकों की संख्या	आवृति अंश	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
बालकों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध	अन्तर्मुखता	55	53	0.354**	सार्थक
	शैक्षिक आकांक्षा				
	बहिर्मुखता	140	138	0.128	असार्थक
	शैक्षिक आकांक्षा				

** = 0.01 सार्थकता स्तर

सारणी 2 में सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों के व्यक्तित्व (अन्तर्मुखता तथा बहिर्मुखता) तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक प्रदर्शित किये गये हैं। सारणी से स्पष्ट है कि आवृति अंश 53 पर सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.354 प्राप्त हुआ है, जो धनात्मक तथा निम्न स्तर का है। यह मान चरों के मध्य धनात्मक तथा निम्न स्तर के सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट है कि बालकों की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक रूप से एक ही दिशा में जाने की प्रवृति है।

दूसरी ओर आवृति अंश 138 पर सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों की बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.128 प्राप्त हुआ है, जो धनात्मक तथा अति निम्न स्तर का है। यह मान चरों के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न स्तर के सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि बालकों की बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा में एक ही दिशा में जाने की प्रवृति तो है परन्तु यह प्रवृति सार्थक स्तर की नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना कि''सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है'', आंशिक रूप से निरस्त तथा आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है।

उद्देश्य–3 सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना – सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी–3

सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

	चर	बलिकाओं की संख्या	आवृति अंश	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
बालिकाओं के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध	अन्तर्मुखता	63	61	0.025	असार्थक
	शैक्षिक आकांक्षा				
	बहिर्मुखता	149	147	0.149	असार्थक
	शैक्षिक आकांक्षा				

सारणी 3 में सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व 'अन्तर्मुखता तथा बहिर्मुखता' तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्धगुणांक प्रदर्शित किये गये हैं। सारणी से स्पष्ट है कि आवृति अंश 61 पर सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.025 प्राप्त हुआ है, जो धनात्मक तथा अति निम्न स्तर का है। यह मान चरों के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न स्तर के सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि बालिकाओं की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा में एक ही दिशा में जाने की प्रवृति तो है परन्तु यह प्रवृति सार्थक स्तर की नहीं है।

दूसरी ओर आवृति अंश147 पर सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं की बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.149 प्राप्त हुआ है, जो धनात्मक तथा अति निम्न स्तर का है। यह मान चरों के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न स्तर के सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि बालिकाओं की बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा में एक ही दिशा में जाने की प्रवृति तो है परन्तु यह प्रवृति सार्थक स्तर की नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना कि ''सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है'', पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है।

RESEARCH
RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
Issue : 2 & 3, Vol. : 7, Jul.-Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 41 - 46, ISSN 2278 – 5949

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Research Journal

निष्कर्ष

- सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया है। परन्तु उनकी बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया है। विद्यार्थियों की बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक रूप से एक ही दिशा में जाने की प्रवृति पायी गयी है।
- सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया है। बालकों की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक रूप से एक ही दिशा में जाने की प्रवृति पायी गयी है। सामाजिक रुप से पिछड़े बालकों की बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया है।
- सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व (अन्तर्मुखता तथा बहिर्मुखता) तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया है।

समीक्षा

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन एवं प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों की समीक्षा से यह प्राप्त हुआ कि सिंह एवं कुमार (2011), पटेल (2013), हुसैन (2014), शर्मा एवं सिंह (2014), कुमारी, नीलम (2014) आदि ने अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों पर किये गये अपने अध्ययनों में उनकी शैक्षिक आकांक्षा, शैक्षिक उपलब्धि, स्वनिष्ठा, सजृनात्मकता, समायोजन एवं चिन्ता स्तर में प्रस्तुत अध्ययन के अनुरूप ही सार्थक अन्तर पाया जबकि सिंह, सुनाली (2008), कौर (2012), नेहरा, सुमन (2014), आदि ने अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों पर किये गये अपने अध्ययनों में उनकी शैक्षिक आकांक्षा एवं अन्य कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया। उपरोक्त अध्ययनो में बालकों की तुलना में बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा उच्च पायी गयी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा उच्च पायी गयी। प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक रुप से पिछड़े विद्यार्थियों की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया है। परन्तु उनकी बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया है। विद्यार्थियों की बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक रूप से एक ही दिशा में जाने की प्रवृति पायी गयी है। बालकों की अन्तर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया है जबकि उनकी बहिर्मुखता तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया है। सामाजिक रुप से पिछड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व (अन्तर्मुखता तथा बहिर्मुखता) तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया है।

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

इस अध्ययन से हम यह जानकारी प्राप्त कर सकते है कि बच्चों का व्यक्तित्व किस प्रकार का है तथा उनकी शैक्षिक आकांक्षा का स्तर क्या है। शिक्षकों एवं शिक्षण संस्थानों के दृष्टिकाण से यह जानकारी अत्यन्त महत्वपूर्ण होगी जिससे कि वे अपनी शिक्षण विधि में सुधार करके इन्हें प्रभावित करने वाले कारणों को दूर करने का प्रयास कर सकते है, जिससे बच्चों की उपलब्धि का स्तर बढ़ेगा जिसका सीधा प्रभाव अध्यापकों तथा शिक्षण संस्थाओं की उपलब्धि पर पडता है। समाज तथा अभिभावकों की दृष्टि से यह अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसकी जानकारी के आधार पर वे अपने बच्चों का इस प्रकार का वातावरण दे सकते है, जिससे उनके व्यक्तित्व, समायोजन तथा शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का विकास होगा। विभिन्न शैक्षिक एवं सामाजिक नीति निर्माताओं के लिए यह जानकारी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, शैक्षिक आकांक्षा एवं समाज में समायोन की क्या स्थिति है। अतः यह अध्ययन नीति निर्माताओं को अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की स्कूली शिक्षा से जुड़ी नीतियों को बनाने के लिए सहायता प्रदान कर सकता है जिससे वे पाठ्यचर्या में इस प्रकार की क्रियाओं को शामिल करे जिसमें नवीन शिक्षण विधियों का निर्माण, पाठ्यक्रम व पाठ्य पुस्तकों तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सुधार जैसी नीतियों का समावेश करे जिससे अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, समायोजन एवं शैक्षिक आकांक्षा की क्षमता का विकास हो सके और वे समाज की मुख्य धारा में शामिल हो सके। अतः शिक्षा के माध्यम से ही इस वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों, जरुरतों, आवश्यकताओं, आकांक्षाओं एवं सामाजिक परिवेश में उनके समायोजन क्षमता को समझना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- कौल, लोकेश (2009), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा0 लि0।
- गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता, अलका (2011), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
- जायसवाल, एस0 (1996), व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

- भटनागर, ए0बी0, भटनागर, एम0 एवं भटनागर, ए0(2010), अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, मेरठ : आर0 लाल0 बुक डिपो।
- वर्मा, आर0एस0, सिंह, एस0 एवं शर्मा, डी0(1994), व्यावहारिक मनोविज्ञान, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- सिंह, अरुण कुमार (2012), मनोविज्ञान, समाज शस्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटनाः मोतीलाल बनारसीदास।
- सक्सेना, एन0 आर0 एस0 एवं कुमार, एस0 (2010), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।
- शर्मा, आर0ए0 (2009), शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व, मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।
- श्रीवास्तव, डी0एन0 (2009), व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

जर्नल्स

- सिंह, सुनाली (2008). माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि, शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व व शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), चौ0 चरण सिंह वि0वि0, मेरठ।
- सिंह, पवन कुमार (2011). होम इन्वायरमैंट एज द डिटरमिनैन्ट ऑफ एजुकेशनल एस्पिरेशन्स, रिसेन्ट रिसर्च इन साइन्स एण्ड टैक्नोलोजी, 3, पृ0सं0 25–27
- कौर, परविन्दरजीत (2012).एजुकेशनल एस्पिरेशनस ऑफ एडोलेसेन्टस इन रिलेशन टू देयर लेवल ऑफ इन्टेलीजेन्स, इन्टरनेशनल मल्टीडिसीप्लिनरी इ–जर्नल, वोल्यूम–I, इश्यू–VII, पृ0सं0 37–43
- पटेल, एच0टी0 (2013). इम्पैक्ट ऑफ सैल्फ–इस्टीम ऑन पर्सनेलिटी एण्ड एडजैस्टमेंट, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन हयूमैनिटीज एण्ड सोशल साइन्सेज, वोल्यूम–1, इश्यू–5, पृ0सं0 52–37
- मिश्रा, सविता (2013).साइन्स एटिट्यूड एज़ डिटरमिनेन्ट टू एजुकेशनल एस्पिरेशनस इन स्टूडेन्टस, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग इन्वेन्शनस, वोल्यूम–2, इश्यू–9,पृ0सं0– 24–33
- कुमारी, नीलम (2014). ए स्टडी ऑफ इफैक्ट ऑफ रिलीजियस बिलीफस ऑन द एजुकेशनल एस्पिरेशनस ऑफ रूरल एण्ड अर्बन मुस्लिम वूमेन, रिसेन्ट एजुकेशनल एण्ड साइक्लोजिकल रिसर्चज, वोल्यूम –3, वर्ष –2, पृ0सं0 55–58
- नेहरा, सुमन (2014). इफैक्ट ऑफ पर्सनेलिटी ऑन एकेडमिक अचीवमेंट एट सेकेन्डरी लेवल, इन्टरनेशनल मल्टीडिसीप्लिनरी ई–जर्नल, वोल्यूम–III, इश्यू–I, पृ0सं0 9087–9101
- भटट, सुषमा तथा कुमार, गौरव (2014). एजुकेशन एस्पिरेशन लेवल ऑफ सीनियर सेकैन्डरी स्टूडेन्टस ऑफ गर्वनमेन्ट एण्ड प्राइवेट स्कूल, रिसेन्ट एजुकेशनल एण्ड साइकलोजिकल रिसर्चज, वोल्यूम –3, वर्ष–2 पृ0 सं0 52–54.
- शर्मा, पूनम तथा सिंह, द्विव्या (2014). ए कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ पर्सनेलिटी ट्रेटस ऑफ स्टूडेन्टस बिलोंगिंग टू सी0बी0एस0सी0 एण्ड यू0पी0 बोर्ड, रिसेन्ट एजुकेशनल एण्ड साइक्लोजिकल रिसर्चज, इश्यू–2, वर्ष–3, पृ0सं0 15–18
- शर्मा, पूनम एण्ड सिंह, दिव्या(2014), ए कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ पर्सनैल्टी ट्रेटस ऑफ स्टूडेटस बीलोगिंग टू सी0बी0एस0सी0 एण्ड यू0पी0 बोर्ड, रिसैन्ट एजुकेशनल एण्ड साइकलोजीकल रिसर्च. वॉल्यूम–3, जुलाई–सितम्बर, आइ0एस0एस0एन0 नं0–2278–5949, पेज न015–18.
- हुसैन, बी0ए0 (2014). रिलेशनशिप बिटविन पर्सनेलिटी टाइप्स 'ए' एण्ड 'बी' एण्ड क्रियेटिविटी लेवल ऑफ सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेन्टस इन क्वारा स्टेट, नाइजीरिया, आई0ओ0एस0आर0 जर्नल ऑफ हयूमैनिटीज एण्ड सोशल साईन्स, वोल्यूम–19, इश्यू–8, वर्जन–VI, पृ0सं0 58–63.